International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XI, Issue II, March – April 2024 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.991

हिन्दी कवि राजकमल चौधरी का काव्य : कथन और शिल्प–योजना

डॉ. बृजलाल अहिरवार
प्रभारी प्राचार्य / सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शा. महा. ढीमरखेड़ा कटनी (म.प्र.)

सारांश–: हिन्दी कवि राजकमल चौधरी सच्चे अर्थों में नवीन कवि हैं क्योंकि 'नयी कविता' से अपना प्रस्थान दिखाने के लिए उन्होंने 'अकविता आंदोलन' में शामिल होना स्वीकार किया। उनका संबंध बंगाल की 'भूखी पीढ़ी' से भी जुड़ा। इन दोनों धाराओं से प्रस्थान भी लक्षित किया जा सकता है। प्रतिक्रिया और समस्या के बेबाक चित्रण के बावजूद 'अकविता' के कवियों के काव्य में एक प्रकार की 'तटस्थता' पायी जाती है, जबकि भूखी पीढ़ी के कवियों में पराजयबोध और मृत्युबोध की प्रधानता पायी जाती है। राजकमल चौधरी तटस्थ न होकर युद्धरत कवि हैं। वे जिजीविषा और मुक्ति के संदेशवाहक कवि हैं। मुक्तिबोध, राजकमल चौधरी और धूमिल को प्रस्थानत्रयी के कवियों के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं। उनकी कविताएँ समकालीन कविता की उपलब्धि मानी जा सकती हैं। युग की चेतना को झकझोरने तथा अभिव्यक्ति के क्षेत्र में नयी लहर पैदा करनेवाले कवि के रूप में राजकमल चौधरी को कबीर और निराला से प्रेरणा मिली है। लम्बी कविता ही उनकी शिल्पगत उपलब्धि का आधार रही है। उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से अंधेपन के विरूद्ध नंगेपन की कार्यवाही की है। 'मुक्ति–प्रसंग' समकालीन हिन्दी कविता की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

मुख्यशब्दः प्रस्थानत्रयी, प्रतिश्रुति, आत्म–चेतस्, विश्व–चेतस्, संवेदनात्मक ज्ञान, ज्ञानात्मक संवेदना।

प्रस्तावना –:

हिन्दी कवि राजकमल चौधरी का काव्य समकालीन कविता का अविभाज्य अंग है। उसकी नवीनता चुनौतिपूर्ण है। अकविता तक सीमित कर देने के कारण उनके काव्य का मूल्यांकन बाधित हुआ है। परंपरागत मूल्यों के सिंहावलोकन और नवीन मूल्यों के अन्वेषण की दृष्टि से भी उनका काव्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। राजकमल चौधरी के काव्य को पूर्वाग्रह मुक्त होकर देखने की आवश्यकता है। इन्हीं आवश्यकताओं से प्रेरित होकर यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस तथ्य को स्पष्ट करना है कि किस प्रकार हिन्दी कवि राजकमल चौधरी ने नयी कविता की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए साठोत्तरी कविता के क्षेत्र में कथ्य, शिल्प और भाषा की दृष्टि से एक नये ढंग की कविता की प्रस्तावना प्रस्तुत की। उनकी कविता विवादास्पद होने के बावजूद महत्त्वपूर्ण है। नवीन अभिरूचि की दृष्टि से उनके काव्य का क्या महत्त्व है? इसकी पड़ताल करना भी इस अध्ययन का दूसरा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। यहाँ यह भी एक विचारणीय प्रश्न उभरकर सामने आता है कि क्या समकालीन कविता के मूल्यांकन के लिए नये सौंदर्यशास्त्र की आवश्यकता नहीं है? राजकमल चौधरी के काव्य के प्रसंग में इस प्रश्न पर विचार करना भी अपेक्षित है।

परिकल्पना–:

राजकमल चौधरी समकालीन हिन्दी कविता की दृष्टि से नवप्रस्थानित कवि हैं। उनकी कविता 'मुक्ति–प्रसंग' का प्रकाशन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय घटना मानी जाती है। अनेक विवादों को जन्म देनेवाली यह कविता हिन्दी साहित्य की एक उपलब्धि भी मानी जाती है। समकालीन हिन्दी कविता की यह विशेषता है कि अपने देशकाल और समाज के साथ ही उसका कवि के साथ भी आत्मीय संबंध स्थापित हो गया है। इसलिए बहुधा कविता का कवि की वैयक्तिकता तक सीमित हो जाने का भ्रम होता है। राजकमल चौधरी का काव्य भी इस भ्रम का शिकार रहा है। समकालीन कविता का सबसे विवादास्पद पहलू उसकी भाषा मानी जाती है। इस प्रसंग में अश्लीलता का प्रश्न भी उठाया जाता है। समकालीन कवियों में भाषा के प्रति अतिरिक्त सजगता और संवेदनशीलता पायी जाती है। भाषा की नवीनता कथ्य एवं रूचि की नवीनता से प्रेरित है। परिवर्तन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से स्वतंत्र रखकर इस परिवर्तन को समझना संभव नहीं है। इन्हीं कुछ बिन्दुओं को उद्घाटित करने के लिए इस अध्ययन की परिकल्पना की गई है।

शोध–विधि–:

प्रस्तावित शोध में मननात्मक शोध की निरूपणात्मक, व्याख्यात्मक और मूल्यांकनपरक विधियों को अपनाया गया है। यहाँ मुख्य रूप से तथ्यपरक आलोचनात्मक विधि और शोधपरक वस्तुनिष्ठ विधि अपनायी गयी है।

प्रदत्तों का विश्लेषण–ः

हिन्दी कवि राजकमल चौधरी को प्रस्थानित कवि कहना सकारण है। नयी कविता से अलग राह बनानेवालों में उनके पूर्ववर्ती मुक्तिबोध और उनके परवर्ती धूमिल अत्यंत महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इन दोनों का मध्यवर्ती होने के कारण राजकमल चौधरी की ओर ध्यान खिंच जाना स्वाभाविक है। इस संदर्भ में समकालीन हिन्दी समीक्षक हुकुमचंद राजपाल का कथन है, ''हम समकालीन कविता के कवि–धरातल पर तीन पड़ाव मानते हैं– पहला पड़ाव मुक्तिबोध हैं, दूसरा राजकमल चौधरी तथा तीसरा धूमिल। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है'(सन् 1964),'मुक्ति–प्रसंग' (सन् 1966) तथा 'संसद से सड़क तक' (सन् 1972) का प्रकाशन कविता–विकास में अपना महत्त्व बना चुके हैं। समकालीन हिन्दी–आलोचना का इनके द्वारा अपना पृथक् मुहावरा बना है। आलोचना में इतिहास–बोध, राजनीतिक समझ, व्यवस्था–विरोध तथा नकार को विशेष बल मिला है। ध्यातव्य यह है कि ये तीनों कवि एक काव्यधारा के तीन पड़ाव होते हुए कथ्य एवं प्रस्तुति के धरातल पर भिन्न हैं।''1

साठोत्तरी कविता कई अर्थों में पूर्व की कविता से भिन्न है। इसका अर्थ यह नहीं है कि यह कोई आकाशजीवी कविता है। इसकी पृष्ठभूमि में नयी कविता है। विकास का प्रत्येक चरण अपने आप में महत्त्वपूर्ण होता है। प्रत्येक अग्रगामी कविता–धारा का पूर्ववर्ती धारा से द्वन्द्वात्मक संबंध होता है। नयी कविता और साठोत्तरी कविता के बीच भी द्वन्द्वात्मक संबंध है। मुक्तिबोध ने स्पष्ट शब्दों में नयी कविता के आत्मसंघर्ष की बात स्वीकार की है। इस संदर्भ में कवि–आलोचक कुमार कृष्ण का कथन द्रष्टव्य है, ''साठ के बाद जिस नयी पीढ़ी के आगमन की बात कही जाती है उसमें विद्रोही पीढ़ी, क्रुद्ध पीढ़ी, श्मशानी पीढ़ी, अकविता, अस्वीकृत कविता, युयुत्सावादी कविता, प्रतिबद्ध कविता वालों की पीढ़ी भी सम्मिलित है। क्योंकि इन सभी के रूप, सभी की अभिव्यक्ति, सभी के दावे, सभी की भावनाएँ प्रायः एक–सी ही हैं और ये सभी समकालीन मानसिक स्थिति को रूपायित करने का दावा करते हैं।''2 समकालीन कविता का प्रथम संकेत भी नयी कविता और समकालीन कविता के संक्रमण–बिन्दु पर अवस्थित कवि मुक्तिबोध के काव्य–संग्रह 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में मिलता है। वस्तुतः यह नये काव्य–बोध से जुड़ा हुआ काव्य है, जहाँ परंपरागत सौंदर्यबोध को अस्वीकार किया गया है। यहाँ नये भयावह यथार्थ को नयी भाषा में प्रस्तुत किया गया है। फैंटेसी को नये शिल्प के रूप में स्वीकार ही नहीं किया गया है, बल्कि साकार भी किया गया है। जैसा कि मुक्तिबोध ने स्वीकार किया है–

''मेरी ये कविताएँ भयानक हिडिम्बा हैं वास्तव की विस्फारित प्रतिमाएँ विकृताकृति बिम्बा हैं।''3

मुक्तिबोध के प्रस्थान का उल्लेख करते हुए कुमार कृष्ण का कथन है, ''गजानन माधव मुक्तिबोध की कविताएँ नयी कविता की बहुप्रचारित, बहुपरिचित जमीन से अलग दीखती हैं और उनकी पुस्तक 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' का प्रकाशन नयी कविता के अंतर्विरोध को एक विस्फोट बिन्दु तक पहुँचा देता है। इतना ही नहीं मुक्तिबोध की काव्य–प्रतिभा और काव्य–स्वरूप समकालीन कविता का प्रमाण–बिन्दु बन जाता है। पिछले दशकों में काव्य–चेतना और समाज–चेतना के दो प्रायः परस्पर विरोधी धाराओं का अर्न्तद्वन्द्व ही समकालीन कविता के स्फुरण को आयाम देता है।''4

समकालीन कविता के प्रस्थान त्रयी के कवियों में से एक राजकमल चौधरी का नवप्रस्थानित कवि के रूप में उल्लेख करते हुए कुमार कृष्ण ने ठीक लिखा है, ''साठ के बाद की कविता नवीन काव्याभिरुचि, नवीन सौंदर्यबोध और नये संवेदन की कविता है। इसमें सामान्य व्यक्ति के आक्रोश, विरोध, विद्रोह, क्षोभ, उत्तेजना, तनाव और छटपटाहट की प्रधानता है। राजकमल चौधरी की 'मुक्ति–प्रसंग' कविता को नयी कविता से अलग हटने का प्रयास माना जाता है। उसे अस्वीकृति की कविता भी कहा गया है। साठोत्तरी कविता समाज की मृत मान्यताओं, टूटती परंपराओं और सामाजिक, राजनीतिक भ्रष्टाचार से क्षुब्ध युवा मानस की अभिव्यक्ति है। उसे आज की बिखरी हुई दोहरी जिंदगी और बदलते मानवीय संबंधों की अभिव्यक्ति कहा जाता है। अगर इस प्रकार जुलूस, नारे, लाठी चार्ज, कर्फ्यू, चुनाव, मतदान, भीड़ और संसद की बात करती है तो इसलिए कि वह मनुष्य को सही परिवेश में रखना चाहती है।''5

राजकमल चौधरी की कविता से समकालीन कविता के प्रस्थान त्रयी के कवियों में शामिल कवि धूमिल को राजकमल चौधरी की कविता से समकालीन चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा मिलती है। जैसा कि धूमिल ने स्वयं 'राजकमल चौधरी के प्रति' कविता में लिखा है–

''बार–बार उसकी कविताओं में बवासीर की गाँठ की तरह शब्द लहू उगलते हैं और बार–बार मेरे भीतर टूटता है, टूटता है और मुझे तैयार करता है चुनौतियों के सामने।''6

धूमिल की उक्त पंक्तियों के संदर्भ में राजकमल चौधरी के काव्यात्मक व्यक्तित्व और काव्य का मूल्यांकन करते हुए ए. अरविन्दाक्षन ने लिखा है, ''धूमिल की इन पंक्तियों में

राजकमल चौधरी की अनथक पीड़ा की सूचना है और उनकी संघर्ष चेतना की गहराई भी, जो धूमिल को आगे की राह बता देती है। अतः राजकमल चौधरी की लम्बी कविता 'मुक्ति–प्रसंग' मात्र निजी जीवन की दारूणता की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि वह समकालीन अन्तर्विरोधों का हलफनामा भी है।.. . वस्तुतः यह हमारे कालखंड की साजिश है जो आदमियत को हमेशा के लिए नष्ट करने पर तुली हुई है जिसकी तरफ राजकमल चौधरी का अर्थवान इशारा है।''7

धूमिल ने समकालीन कविता के मुहावरे को काफी गहराई से प्रभावित किया है। उन्होंने समकालीन कविता की भाषा को एक वैचारिक भूमि उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। जिस प्रकार मुक्तिबोध ने कविता की रचना–प्रक्रिया पर गहराई से विचार किया था, उसी प्रकार धूमिल ने समकालीन भाषा संबंधी अपने भाषिक चिंतन को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी है। 'भाषा की रात' कविता में धूमिल ने भाषा के शिष्टाचार के पीछे के सच को उजागर करते हुए लिखा है– ''चन्द चालाक लोगों ने– (जिनकी नरभक्षी जीभ ने पसीनों का स्वाद चख लिया है) बहस के लिए भूख की जगह भाषा को रख दिया है।''8

धूमिल के अनुसार समकालीन कविता की भाषा पर बहस करना बेनामी है। यह असली मुद्दों से लोगों का ध्यान हटाने की साजिश है। साठोत्तरी कविता की भाषिक चेतना को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है, ''छायावाद के कवि शब्दों को तोल कर रखते थे, प्रयोगवाद के कवि शब्दों को टटोलकर रखते थे, नयी कविता के कवि शब्दों को गोलकर रखते थे, सन् साठ के बाद के कवि शब्दों को खोलकर रखते हैं।''9

काव्यभाषा संबंधी उक्त कथन राजकमल चौधरी की कविता पर भी चरितार्थ होती है। समकालीन कविता की भाषा पर टिप्पणी करते हुए डॉ. हुकुमचंद राजपाल ने लिखा है, ''समकालीन कवि इसकी चिंता नहीं करते कि अमुक कथन कितना अश्लील है अथवा विद्रूप है। वह तो यथार्थ और सपाट देखने और कहने का पक्षधर है। वह जिंदगी की विसंगतियों को, कुण्ठाओं, अन्तर्व्यथाओं को उसी रूप में सीधे कहने में विश्वास रखता है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि छायावादी–पूर्व तथा प्रगतिवादी कवियों में इस प्रकार की स्थिति को प्रस्तुत करने की क्षमता रही है। पर समकालीन कवि किसी प्रकार की सीमा, किसी प्रकार की मर्यादा–मूल्य इत्यादि के आवरण को स्वीकार नहीं करता है। यही कारण है कि समकालीन कविता को 'विद्रोही कविता' का नाम दिया जाता है। ये कवि केवल सामाजिक रूढ़ियों का विरोध नहीं करते, वरन् जीवन जीने की अपने अनुकूल राह की खोज भी करना चाहते हैं।''10

धूमिल ने समकालीन कविता को नयी त्वरा प्रदान की। उन्होंने इस धारा की स्थिति को स्पष्ट करने का भी प्रयास किया। कविता आदमी होने का धर्म निभाना है। कई बार कविता कवि को धोखा भी दे जाती है। वह मानवता के हित के विरूद्ध लिखी चली जाती है। इस प्रकार के धोखा से बचने के लिए कवि को सतर्क रहना पड़ता है। कहने को तो प्रत्येक कवि अपने समय में समकालीन कहलाने के हकदार होते हैं, लेकिन धूमिल के अनुसार समय की माँग के अनुसार चलना, स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा और उसके लिए पहल तथा उस पहल के समर्थन में लिखा गया साहित्य ही समकालीन साहित्य है। धूमिल ने समकालीन कवियों की विशेषताओं की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए लिखा है, ''आज का कवि वैज्ञानिक चेतना का कवि है, एक ऐसा कवि, जिसकी दृष्टि विश्व की संपूर्ण क्रिया–शीलता का अध्ययन कर रही है। उसके सामने तीव्रगामी विकास है, निरन्तर परिवर्तन की श्वास से दहकता हुआ। हर वस्तु, हर मान्यता टकराती हुई, टूटती हुई और पुनः संयोजित होने के लिए आतुर। और स्थापत्य की इस भयावह संक्रामकता में अस्तित्व अकेला रह गया, घुटन भरे वातावरण में खण्डित व्यक्तित्व। पर अनास्था हमारी कविता का मूल स्वर नहीं और इसके प्रमाण हैं, नयी कविता के कुछ अकुण्ठित गायक..।''11

मुक्तिबोध ने एक नये प्रकार के कवि–चरित्र की आवश्यकता पर बल दिया है। उन्होंने जनता के सच्चे हितैषी कवि की कल्पना की है जो जनचरित्री कविता की रचना कर सके। उनके शब्दों में, ''आज ऐसे कवि–चरित्र की आवश्यकता है, जो मानवीय वास्तविकता का बौद्धिक और हार्दिक आकलन करते हुए, सामान्य जनों के गुणों और उनके संघर्षों से प्रेरणा और प्रकाश ग्रहण करें, उनके संचित जीवन–विवेक को स्वयं ग्रहण करें तथा उसे और अधिक निखारकर कलात्मक रूप में उन्हीं की चीज को उन्हें लौटा दें।''12

मुक्तिबोध ने अपने समन्वित दृष्टिकोण का परिचय देते हुए लिखा है, ''मैं यह नहीं कहना चाहता कि अपने अंतर्जीवन के विविध पक्षों के चित्रण में सौंदर्य नहीं है, या आत्मपरकता गलत है। मैं यह कह रहा हूँ कि अपने अंतःकरण में स्थित जीवनानुभवों को उनके संपूर्ण वाह्य संदर्भों के साथ उपस्थित करना आवश्यक है। हम अपने–आपको यदि काट देंगे, जैसे कि सौंदर्याभिरूचि के नाम पर हम अपने–आपको काट रहे हैं, तो फिर कुछ नहीं बचेगा। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने–आपको संपूर्ण रूप में देखें।''13

धूमिल ने भी नयी कविता से प्रस्थान करने की बात कही है। उन्होंने स्पष्ट घोषणा की कि, ''हमें नयी कविता से आगे सोचना है, नयी कविता के नाम पर फैली विकृति के विषय में सोचना है। दलदल पर नये तख्ते रखना है ताकि नये भाव, नयी आस्थाएँ उसे पार कर सकें। इसके लिए हमें एकान्त की 'दमघोंट' उचाट से बाहर निकलकर, प्रश्नों के उत्तर ढूँढते चौरस्तों पर खड़ा होना पड़ेगा।''14

राजकमल चौधरी में सबसे बड़ा परिवर्तन यह देखने को मिलता है कि उन्हें समकालीन राजनीति से मोहभंग हो गया। उससे जनता के कल्याण होने का विश्वास खत्म हो गया। उनकी कविता राजनीति से मोहभंग होने की अभिव्यक्ति है। यह उनकी वैयक्तिक और सार्वजनिक मुक्ति का शंखनाद है, जिसकी प्रतिध्वनि आज तक गूंज रही है। उन्होंने राजनीति के प्रति मोहभंग होने और इसके फलस्वरूप वैयक्तिक तथा सार्वजनिक जीवन में मूल्यहीनता एवं संस्कारहीनता की स्थिति उत्पन्न होने की बात स्वीकार की है। उनकी स्वीकारोक्ति द्रष्टव्य है, ''1960 तक आते–आते हमलोगों के दिमाग में यह बात जमकर बैठ गई कि राजनीतिक ताकतें हमारी जिंदगी और हमारे जेहन की मसीहाई नहीं कर सकतीं। राजनीति किसी भी 'मूल्य' और किसी भी 'संस्कार' पर विश्वास नहीं करती है।''15

राजनीति ने आर्थिक दुष्चक्र चलाकर जनहित को रौंद दिया। फलतः जनता कहीं की नहीं रही। वोट के खरीददारों ने जनता को थोड़ी–थोड़ी सुविधाएँ देकर अपना काम निकालने की नीति को राम–वाण की तरह इस्तेमाल किया। इस प्रसंग में धूमिल ने लिखा है– 'मैं पूरी तत्परता से उसे सुन रहा था एक के बाद दूसरा दूसरे के बाद तीसरा तीसरे के बाद चौथा चौथे के बाद पाँचवा... यानी कि एक के बाद दूसरा विकल्प चुन रहा था मगर मैं हिचक रहा था क्योंकि मेरे पास थोड़ी सुविधाएँ थीं जो मेरी सीमाएँ थीं यद्यपि यह सही है कि मैं कोई ठंडा आदमी नहीं हूँ मुझमें भी आग है– मगर वह भभककर बाहर नहीं आती क्योंकि उसके चारों तरफ चक्कर काटता हुआ एक 'पूँजीवादी' दिमाग है जो परिवर्तन तो चाहता है मगर आहिस्ता–आहिस्ता कुछ इस तरह की शालीनता बनी रहे।''16

मूल्यहीन राजनीति और तज्जन्य अर्थनीति का शिकार होनेवाली जनता को संदेश देने के लिए प्रतिबद्ध राजकमल चौधरी की स्पष्ट घोषणा है, ''हमलोग अजनबी नहीं हैं, और न निर्वासित ही हैं। आत्म–निर्वासन भी हमने नहीं लिया है। .. .हमें इस बात की पूरी स्वाधीनता है कि हम पूंजीवादी अर्थतंत्र और शासनतंत्र के विशाल आक्टोपस की बाहों में अपना गला फंसाने से इन्कार कर दें। लेकिन यह इन्कार तटस्थ, दयनीय आत्मपीड़ाओं से भरा हुआ नहीं होगा। इस इन्कार में एक मजबूत और ईमानदार आदमी और और उसके साथ चलते हुए जुलूस की ताकत होगी।''17 '

मुक्ति–प्रसंग' की प्रसिद्ध पंक्तियों के माध्यम से यही कथ्य प्रतिध्वनित होता है– ''आदमी को तोड़ती नहीं हैं लोकतांत्रिक पद्धतियाँ केवल पेट के बल उसे झुका देती है धीरे–धीरे अपाहिज धीरे–धीरे नपुंसक बना लेने के लिए उसे शिष्ट राजभक्त देशप्रेमी नागरिक बना लेती हैं आदमी को इस लोकतंत्री संसार से अलग हो जाना चाहिए।''18

राजकमल चौधरी के कथ्य पर प्रकाश डालते हुए देवशंकर नवीन ने लिखा है, ''राजकमल चौधरी की सन् 1960 के बाद की रचनाओं में वह चाहे कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध–आलोचना–डायरी, रूपक आदि कुछ भी हो, समकालीन समाज की विकृति का वास्तविक चित्र अंकित हुआ है, भयावह यथार्थ का क्रूरतम चेहरा सामने आया है। जीवन–संग्राम की त्रासदियों और विसंगतियों से ऊबे हुए, आहत, भयमुक्त और क्रोध से भरे हुए समाज एवं समय को नेतृत्व देने हेतु अपनी पूरी रचनाशीलता के साथ राजकमल चौधरी सामने आए हैं। स्वाधीनता के बाद एक–सवा दशक से सँजोया धैर्य, यहाँ क्षत–विक्षत हुआ लगता है। जहाँ मशीन–तंत्र, राजनीति–तंत्र और अर्थ–तंत्र देश के नागरिक को चूहों और मच्छरों की हैसियत में ले आए, जहाँ प्राणरक्षा हेतु टुकड़ा भर रोटी के लिए चीखती नारी कहे कि, ''मुझे खरीद लें फटे कोट की तरह टाँग दें दीवार पर भले ही न पहनें पर, मुझे खरीद लें मैं भूखी हूँ, प्यासी हूँ, हूँ बीमार यम के हाथों से मुझे छीन लें... ''19

राजकमल चौधरी ने लिखा है, ''हम लोग, जिन्होंने 1960 के आसपास लिखना शुरू किया है, इस जनसाधारण में रहते हुए, इस जनसाधारण के साथ जीते–मरते हुए, नफरत करते हैं। हम लोग जनसाधारण से और जनसाधारण को यह निस्पृह, असंलग्न, रूप–रंग–हीन जीवन बिताने के लिए विवश करनेवालों से नफरत करते हैं। हमलोग समाज से अलग नहीं हैं। अपराधियों का जीवन नहीं बिताते। अपने को 'अलग' समझते हैं, 'ऊंचा' नहीं समझते। 'अलग' भी केवल इस अर्थ में, कि हम अपने पूर्वजों की तरह संतुष्ट या अपने पूर्ववर्तियों की तरह पराजित अथवा अपने चारों ओर नींद में डूबे हुए जनसाधारण की तरह निस्पृह नहीं हैं। हम नफरत करते हुए भी, प्यार करते हैं। हम प्यार करते हुए भी सच को, गंदगी को, अंधेरे को, पाप को भूल नहीं पाते हैं। कविता हमारे लिए

भावनाओं का मायाजाल नहीं है। जिनके लिए कविता ऐसी थी, वे लोग बीत चुके हैं।''20

राजकमल चौधरी की रचनाधर्मिता का उद्‌घाटन करते हुए देवशकर नवीन ने लिखा है, ''राजकमल चौधरी की कविताएँ आधुनिक सभ्यता की विकासमान दानवता के जबरे में बैठे निरीह जनमानस को ललकारने और उसे अपनी उस ताकत की याद दिलाने के गीत हैं, जिसे व्यवस्था की चकाचौंध रोशनी में या बेतहाशा शोरगुल में जनता भूल गई थी। राजकमल की कविताएँ अनाज–पानी के चंद देवताओं के समक्ष सामुदायिक शक्ति की उद्‌घोषणा है। भाषा में बेहिसाब तेज, जोश, ललकार, आक्रामकता, खीज है, पर जनहित के सारे पहलुओं पर अत्यंत सावधान आयास भी है।''21 कविता संबंधी मान्यताओं को जानने के लिए राजकमल चौधरी का यह वक्तव्य द्रष्टव्य है,''कंकावती के पूर्व मैं कविता को एक आयोजित शब्द–वितरण (अथवा शब्द–प्रवाह) मानता था। संस्कृत काव्य–शास्त्र ने मुझे यही बताया था। किंतु, निराला और अमेरिकी कवि वाल्ट ह्विट्‌मैन के संपर्क ने मुझे अलंकार की मैथुन–चेष्टाओं से मुक्त किया।''22 राजकमल चौधरी यह मानते हैं कि नई शब्दावली और नए शिल्प में काल्पनिक सत्यों और बीते हुए मूल्यों की कविता प्रस्तुत करना उनके लिए संभव नहीं हुआ। पूर्ववर्तियों का अनुकरण करना भी उनके लिए असंभव था। चौधरी जी की मान्यता है कि उनकी कविता उनकी मुक्ति का साधन है। यदि कविता स्वयं बंधन–मुक्त नहीं होगी तो वह मनुष्य को कैसे मुक्त करेगी? उनके पूर्ववर्ती निराला ने इस बात की पहले ही घोषणा कर रखी थी। निराला के शब्दों में, ''साहित्य की मुक्ति उसके काव्य में देख पड़ती है। इस तरह जाति के मुक्ति–प्रयास का पता चलता है। धीरे–धीरे चित्रप्रियता छूटने लगती है। मन एक खुली हुईप्रशस्त भूमि में विहार करना चाहता है। चित्रों की सृष्टि तो होती है, पर वहाँ तमाम चित्रों को अनादि और अनन्त सौंदर्य में मिलाने कर चेष्टा रहती है।''23 छंद से मुक्ति की घोषणा के अतिरिक्त 'भिन्न तुकान्त' या अतुकान्त कविता का आना समय की मांग के अनुरूप होने के कारण संभव हुआ। राजकमल चौधरी ने ह्विट्‌मैन की साहसिकता और प्रतिभा की भी प्रशंसा की है। इस अमेरिकी कवि की कविता में शैली संबंधी मौलिकता पायी जाती है, उनके विचार गतिशील हैं और उनकी अपनी लय–योजना है। ह्विट्‌मैन की क्रांतिधर्मिता का उल्लेख करते हुए कहा गया है, ''ह्विट्‌मैन कविता को मध्ययुगीन सामंती मनोवृत्ति से मुक्त करके उसे तत्कालीन नागरी सभ्यता के चित्रण योग्य बनाना चाहते थे। वे आधुनिक लोकतंत्रात्मक परंपरा के अनुरूप काव्य की एक नयी विधा का उन्मेश करना चाहते थे। इस कार्य के संपादन के लिए उनमें पर्याप्त प्रतिभा थी। इसलिए वे परंपरागत काव्य शैली का निराकरण करते हुए एक नयी शैली की प्ररोचना में व्यस्त हो गये। किंतु वे स्वयं को परंपरा के प्रभाव से पूर्णतः विमुक्त नहीं कर पाये। उनकी दीर्घ, अव्यवस्थित पंक्तियों में परंपरा का प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। किंतु उनके काव्य में प्रकृत मानव की तीव्रता और पाश्विकता का भी समावेश है जिसके निराकरण का प्रयास सामन्ती और आभिजात्यवादी काव्य– परंपरा के द्वारा शताब्दियों से होता रहा है।''24

राजकमल चौधरी की कविता का अपना व्याकरण है। उनके काव्य में मौजूद 'अराजक तत्त्व' उनकी प्रतिभा से संचालित हैं, जो निरूद्देश्य नहीं हैं। चौधरी जी अपनी कविता में सर्वत्र उपस्थित रहते हैं, वहाँ मनुष्य मौजूद रहता है, उससे उनकी सभ्यता–संस्कृति जुड़ी रहती है, समस्याएँ जुड़ी रहती हैं।ऐसा क्यों है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने लिखा है, ''सबसे पहले मेरा अपना मनुष्य, अर्थात् मैं। अर्थात् मेरी अपनी कविता का सबसे पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण विषय मैं स्वयं हूँ। मैं और मेरा अस्तित्व; मैं, और मेरा अहं; मैं और मेरा व्याकरण।''25

राजकमल चौधरी की कविता को किसी काव्यशास्त्र की अपेक्षा नहीं है। यह उनकी आंतरिक उर्जा द्वारा संचालित है और शब्दों की शक्ति पर आश्रित है। उनकी स्पष्ट घोषणा है, ''मैं रोमैंटिक अथवा आदर्शवादी अथवा मूर्तिपूजक अथवा 'रोमान्स'– प्रिय नहीं हूँ। मैं व्यक्ति–सत्यों और वस्तु–सत्यों को किसी भी स्वप्नावेष्टित 'आदर्श' से अधिक महत्त्व देता हूँ। अर्थनीति और ऑटोमैटिक मशीनों के इस युग में कविता का शास्त्रीय अरण्य रोदन, अथवा अशास्त्रीय प्रलाप, दोनों में से कुछ भी मुझे पसंद नहीं है। कविता मेरे अंतःकरण और मेरे संसार में मेरी निरंतर यात्रा का प्रतिफल है; और कविता मेरी यात्रा है। अपनी कविता के साथ मैं यात्रा करता हूँ; अपने अंतःप्रदेश में; और अपने चतुर्दिक की वस्तुओं, स्थितियों, घटनाओं, यंत्रों, चक्रों और काल–प्रवाह के अंतःप्रदेश में। यह यात्रा, किन्तु मेरे मनुष्य की यात्रा है। क्योंकि मैं मनुष्य हूँ और मनुष्य बने रहना मेरे लिए पर्याप्त है। इसके साथ ही, अपने कवि–कर्म को मैं अपना सबसे महत्त्वपूर्ण, स्थायी, अनिवार्य और प्राथमिक कर्म मानता हूँ।''26

राजकमल चौधरी कविता को एक गंभीर वृत्ति मानते हैं, केवल वागाडम्बर नहीं। निराला उन्हें सार्थक कवि लगते हैं। इसका कारण आत्मसंघर्ष से उद्‌भूत उनकी कविता है। कविता उनके लिए मुक्ति का साधन भी है और साध्य भी। उन्होंने माना है, ''अगर, मेरी कविता मुझे मुक्त नहीं करती है, तो उसे मैं मात्र

एक वक्तव्य मानता हूँ, कविता नहीं मानता। और मेरी मुक्ति मेरे मनुष्य की मुक्ति है, मेरा कवि जिससे अलग, ऊपर या विच्छिन्न नहीं है, किसी भी परिस्थिति में नहीं। कविता मेरी उपलब्धि (अर्थात् मुक्ति) का प्रयास भी है और मेरी उपलब्धि भी है। मैं मनुष्य हूँ, और मैंने अपनी मुक्ति के लिए अपनी कविता उपलब्ध की है।''27

राजकमल चौधरी में विषय और उसकी अभिव्यक्ति को लेकर किसी प्रकार की कुंठा या वर्जना का भाव मौजूद नहीं है। वह आत्म–चेतस् और विश्व–चेतस् कवि हैं। उन्होंने घोषणा की है, ''अपनत्व मुझे कविता से, और व्यक्ति– करण से, और व्यक्तिकरण से है। अपनत्व मशीनों से भी है, लेकिन, मशीनीकरण से बेहद परहेज है। जनसाधारणीकरण और मशीनीकरण के संसार से भागकर मैं कविता के संसार में आता हूँ। मगर. मुंह छिपाने के लिए नहीं, शक्ति संचय के लिए। मुझे राजनीति, अर्थचक्र और मशीनों की गति को बदलना है– कविता की ताकत से बदलना है!... मैं अपने मनुष्य को परतंत्र बनाए रहने वाली शक्तियों को बदलना चाहता हूँ। मेरी कविता, मेरी मुक्ति के लिए है। अर्थात्, मेरी कविता मुझे मुक्त करती है''28

मुक्तिबोध ने इस बात पर भी जोर दिया है कि विश्व–दृष्टि का विकास तब तक नहीं होगा, जब तक हम मानवता के भविष्य–निर्माण के संघर्ष में आस्था न रखें, और आध्यात्मिक रूप में उससे सम्बद्ध न हो जाये। राजकमल चौधरी के संदर्भ में मुक्तिबोध की उक्त बातों पर विचार करने से यह स्पष्ट होता है कि उनमें केवल आत्म–सजगता ही नहीं विश्व–सजगता का भाव भी मौजूद है। वे आत्म–कल्याण और विश्व–कल्याण के लिए संघर्ष में विश्वास रखते हैं। उन्होंने अपने मनुष्य को बचाने के लिए कविता का आश्रय ग्रहण किया है। उन्हें सभी प्रकार की दासता से घृणा है। चौतरफा दासता और अन्याय को देखते हुए उनका आक्रोश, गुस्सा और घृणा मनोविज्ञानसम्मत प्रतीत होता है। इन सब चीजों को उनके कवि व्यक्तित्व से काटकर नहीं देखा जा सकता है, क्योंकि उनका मनुष्यत्व भी उनकी कविता में व्यक्त हुआ है। इस अर्थ में उनकी व्यक्तिपरकता भी उनके काव्य में अभिव्यक्त हुई है। अभिव्यक्ति के मामले में वे सर्वत्र स्वतंत्र हैं। उनकी स्पष्ट मान्यता है, ''इतनी बातों के बाद इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं या मेरे समय का कोई भी दूसरा मनुष्य अपनी कविता में कितना 'अश्लील' होता है; शरीर के किन अंगों और दृश्यों का वर्णन करता है; कितनी मात्रा में गांजा या मस्कोलिन या चरस लेता है; किन गलियों और नाबदानों में रात काटता है, किस प्रकार की यातनाओं और बर्बरताओं को बर्दास्त करता है; और किन शब्दों को अपना दास अथवा अपना ईश्वर स्वीकार करता है।''29 राजकमल चौधरी के कवि की यह मौलिकता है कि वह वैयक्तिक या सामाजिक या मिली–जुली; किसी भी भाव–दशा में अवस्थित हो, उसी से संबंधित विषय का ईमानदारी से यथार्थपरक ढंग से चित्रण कर देता है। कवि जिन शब्दों के माध्यम से सोचता है, उन्हीं के माध्यम से विषय को प्रस्तुत कर देता है। यहाँ शब्दों के परिष्कार की चिंता देखने को नहीं मिलती है। अभिव्यक्ति के मामले में चेतन–अवचेतन मन के बीच की दीवार ढह जाती है। इसे आवेग–प्रसूत अभिव्यति शैली की सीमा या शक्ति– कुछ भी मानी जा सकती है। समकालीन कविता और समकालीन कवि के रूप में राजकमल चौधरी के छंद–विधान पर विचार करते हुए आलोचक नंदकिशोर नवल का मत है, ''आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कभी कहा था कि नया छन्द नये मनोभाव की सूचना देता है। समकालीन कविता में शास्त्रीय या लौकिक छंदों का तो जोर नहीं रहा, उनसे अधिक उसमें संवाद की लय का महत्त्व है, लेकिन जो चीज उनमें नए मनोभाव या मनोदशा की सूचना देती है, वह है उसका नया मुहावरा, जो नए बिम्बों से बना होता है। राजकमल की भाषा अपेक्षाकृत अधिक गद्यात्मक है और उनका बिम्ब–विधान पूर्ववर्ती कवियों की तुलना में एकदम नया है। वे किसी मूर्त वस्तु को विचित्र प्रकार से अमूर्त कर देते हैं और किसी अमूर्त भाव को विचित्र प्रकार से मूर्त।''30

मुक्तिबोध की तरह ही राजकमल चौधरी की भी संपूर्ण रचनात्मक क्षमता की अभिव्यक्ति उनकी लम्बी कविता में देखने को मिलती है। उनकी लम्बी कविता में आत्मपरकता, भावावेग, आक्रामकता, बिम्बों की श्रृंखला, सृजनशीलता और वक्तृत्व–कला के दर्शन होते हैं। शव–यात्रा का मृत संगीत, दास कविता और मुक्ति–प्रसंग जैसी कविताएँ लम्बी कविताओं के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन कविताओं में निराला और कबीरदास के साथ ही राजकमल चौधरी स्वयं मौजूद हैं। इन तीनों कवियों की कविताओं में उनके युग की प्रतिध्वनियाँ गूंज रही हैं। इसलिए उनकी कविताएँ कालजयी हो सकी हैं। तीनों कवियों की रचनाओं के अपने–अपने शिल्प–विधान हैं। शिल्प की मौलिकता के कारण ही शिल्प–संबंधी भिन्नता अर्थहीन हो जाती है। यहाँ नये–पुराने का द्वन्द्व भी निरर्थक हो जाता है। मुख्य बात 'युग की मांग' है जो इन कवियों की रचनाओं को प्रासंगिक बनाये रखती है। राजकमल चौधरी के शिल्प को 'युग की मांग' की कसौटी पर परखना ही उचित है। वैसे उनकी कविता में अनेक प्रकार के उपयोगी तत्त्वों को शामिल किया गया है। मिथकीय प्रतीक, फैंटेसी, मोंटाज,

सजल बिम्बों की शृंखला, तनाव, पोर्नोग्राफी आदि उनकी कविताओं के प्रमुख उपकरण हैं। उनकी भाषा और शब्द–प्रयोग को लेकर होनेवाले सभी विवादों का जवाब यह है कि कवि के लिए 'नंगापन' उतना बुरा नहीं है जितना कि 'अंधापन'। राजकमल चौधरी की कविता में जो 'नंगापन' है वह 'अंधापन' के विरूद्ध एक लड़ाई है। धूमिल ने उनकी अभिव्यक्ति संबंधी विशेषताओं का उद्घाटन करते हुए स्पष्ट किया है, ''उसके पास शराब और गाँजा और शहनाई और औरतों के दिलफरेब किस्से थे मगर ये सब सिर्फ उन पर्दों के हिस्से थे जिनकी आड़ में बैठकर वह कविताएँ बुनता था ... अपनी वासनाओं के अँधेरे में वह खोया हुआ देश था।''31

उनकी काव्य–भाषा का दबाव नये सौंदर्यशास्त्र की रचना के लिए प्रेरित करता है। इस दबाव को नये समीक्षकों पर स्पष्ट देखा जा सकता है। इस संदर्भ में ब्रह्मदेव मिश्र का कथन द्रष्टव्य है,''परम्परागत सौंदर्यशास्त्र की रोमानी–आदर्शोन्मुख दृष्टि की प्रतिक्रिया में यथार्थवादी नजरिये के जितने भी सोच–बिन्दु उभरे, उनमें भाषा के भदेसपन को आजमाना सबसे जोखिम भरा था।.....फलस्वरूप अश्लीलताबोधक एवं अकाव्यात्मक कहे जाने वाले शब्दों के माध्यम से समकालीनता को एक स्पष्ट अर्थ देने के महत्तर कार्य में सफलता प्राप्त कर सका। अश्लील कहे जाने वाले शब्दों के शब्दकोशीय अर्थ पर ध्यान केंद्रित कर उन्हें अकाव्यात्मक कहने तथा नाक–भौं सिकोड़ने की प्रवृत्ति अब सर्वथा अप्रासंगिक हो गयी है। कारण, उससे संदर्भगत सच्चाई का साक्षात्कार नहीं किया जा सकता, जो आज की रचनात्मकता के लिए सर्वोपरि है। अतः शब्दों के काव्यगत प्रयोग को समूची काव्य–संरचना की संगति में देखना ही समीचीन है। धूमिल ने बैलमुत्ती इबारत, औरत का धर्मशाला हो जाना, गाभिन औरत, बच्चे की जूजी आदि अश्लील–से लगनेवाले प्रयोगों को जिस संदर्भ से जोड़कर काव्य का अंग बनाया है, उसमें ये प्रयोग अनावश्यक ध्यान नहीं खींचते। बल्कि संपूर्ण कविता की बुनावट में खपकर ये अर्थ–प्रक्रिया में अपना गहरा योगदान देते हैं।''32

राजकमल चौधरी की लम्बी कविता 'मुक्ति–प्रसंग' की तुलना 'राम की शक्तिपूजा' (निराला) और 'अंधेरे में' (मुक्तिबोध) जैसी कालजयी रचनाओं से की जाती है। मंगलेश डबराल ने इसे सौ वर्षों की दस श्रेष्ठ हिन्दी कविताओं में से एक मानते हुए लिखा है, ''राजकमल चौधरी की लंबी कविता 'मुक्ति–प्रसंग' न सिर्फ इस अराजक कवि की उपलब्धि मानी जाती है, बल्कि लंबी कविताओं में भी एक विशिष्ट जगह रखती है. वह भी हमारी लोकतांत्रिक पद्धतियों की दास्तान कहती है जो जनसाधारण को 'पेट के बल झुका देती है'.''33

निष्कर्ष–:

राजकमल चौधरी हिन्दी के समकालीन कवियों में अपनी खास प्रकार की रचनाधर्मिता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनमें कवि–धर्म के प्रति अपूर्व समर्पण भाव पाया जाता है। उनके काव्य में मनुष्यत्व को बचाने के लिए पशुत्व से संघर्ष के लक्षण मौजूद हैं। मानवीय गरिमा एवं जीवन– सौंदर्य की रक्षा के लिए उन्होंने अमानवीय स्थितियों और कुरूपता का पूरी ईमानदारी से चित्रण किया है। उनमें कबीर की घर फूँक मस्ती और औघड़पन है। वे कुरूपता और राक्षसी वृत्ति से डरते नहीं हैं, बल्कि लड़ते हैं। जिस प्रकार गिन्सबर्ग की कविता ह्विट्मैन की याद दिलाती है, उसी प्रकार राजकमल चौधरी की कविता निराला और मुक्तिबोध की याद दिलाती है। उनकी कविता में 'अकविता' और बंगाल की 'भूखी पीढ़ी' के कवियों की शक्ति तो है, लेकिन उनकी तटस्थता और उनका पराजय–बोध नहीं है। उनकी भाषा में 'भदेसपन' है जो समकालीन कवियों की रचनाधर्मिता का अविभाज्य अंग बन गया है। उनकी कविता में अराजकता और अतिवाद से संबंधित कुछ तत्त्व मौजूद हैं, जिनके कारण उन्हें विवादों और विरोधाभासों का कवि माना जाता है। इन सबके बावजूद राजकमल चौधरी साठोत्तरी पीढ़ी के नवप्रस्थानित प्रतिनिधि हिन्दी कवि हैं। सुझाव राजकमल चौधरी समकालीन हिन्दी कविता केप्रतिनिधि कवि हैं। उनकी कविता के विषय और काव्यभाषा को लेकर जो विवाद की स्थिति बनी है, उसे अब सुलझा लिया जाना चाहिए। समकालीन हिन्दी कविता भी 'अकविता' और 'भूखी पीढ़ी' की स्थिति से बहुत आगे निकल चुकी है। समकालीन कविता के समयोचित एवं समुचित मूल्यांकन के लिए नया सौंदर्यशास्त्र गढ़ने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। यही राजकमल चौधरी के काव्य के सम्यक् मूल्यांकन का उचित समय है। अतः उनकी कविता को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर देखना–परखना चाहिए। उन्हें कहे के अनुसार मान लेने की नहीं, परख कर जान लेने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –:

1. राजपाल, हुकुमचंद : समकालीन हिन्दी समीक्षा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण :2003,पृ.सं.–64,
2. कृष्ण, कुमार : समकालीन कविता का बीजगणित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2004, पृ.सं.–12,
3. मुक्तिबोध, गजानन माधव : चाँद का मुँह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठप्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 1993, पृ.सं.–194,
4. कृष्ण, कुमार : समकालीन कविता का बीजगणित, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2004, पृ.सं.–11,
5. वही, पृ.सं.–12,

6. धूमिल, सुदामा पाण्डेय : संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013, पृ.सं.–37,

7. अरविन्दाक्षन, ए.: समकालीन हिन्दी कविता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2010, पृ.सं.–63,

8. धूमिल, सुदामा पाण्डेय : संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013, पृ.सं.–89,

9. धूमिल, सुदामा पाण्डेय : कल सुनना मुझे, वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2010, पृ.सं.–36,

10. राजपाल, डॉ. हुकुमचंद : समकालीन बोध और धूमिल का काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2013, पृ. सं.–28–29,

11. धूमिल, सुदामा पाण्डेय : कल सुनना मुझे, वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2010, पृ.सं.–38,

12. मुक्तिबोध, गजानन माधव : नयी कविता का आत्मसंघर्ष, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, चौथी आवृत्ति 2012, पृ. सं.–37–38,

13. वही, पृ.सं.–36,

14. धूमिल, सुदामा पाण्डेय : कल सुनना मुझे, वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण :2010, पृ.सं.–38–39,

15. चौधरी, राजकमल : बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृ.सं. –115,

16. धूमिल, सुदामा पाण्डेय : संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013, पृ.सं. –115–116,

17. चौधरी, राजकमल : बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृ.सं. –112,

18. चौधरी, राजकमल : मुक्तिप्रसंग, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2006, पृ.सं.–32,

19. नवीन, सं. देवशंकर : राजकमल चौधरी रचनावली : खण्ड–1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2015, पृ.सं.–15,

20. चौधरी, राजकमल : बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृ.सं. –117,

21. नवीन, सं. देवशंकर : राजकमल चौधरी रचनावली : खण्ड–2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण : 2015, पृ.सं.–12,

22. चौधरी, राजकमल : बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृ.सं. –135–136,

23. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी : परिमल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2015, पृ.सं.–11,

24. वर्मा, डॉ. नरेन्द्र देव : आधुनिक पाश्चात्य काव्य और समीक्षा के उपादान, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, संस्करण : 1971, पृ.सं.–147,

25. चौधरी, राजकमल : बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृ.सं. –120,

26. वही, पृ.सं.–121–122,

27. चौधरी, राजकमल : बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृ.सं. –121,

28. वही, पृ.सं.–121,

29. चौधरी, राजकमल : बर्फ और सफेद कब्र पर एक फूल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2006, पृ.सं. –122,

30. नवल, डॉ. नन्दकिशोर : समकालीन काव्य–यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2004, पृ.सं.–231–232,

31. धूमिल, सुदामा पाण्डेय : संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013, पृ.सं.–35,

32. मिश्र, डॉ. ब्रह्मदेव : धूमिल और उसका काव्य–संघर्ष, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण : 2012, पृ.सं. –85,

33. डबराल, मंगलेशः हिन्दीदिवसः सौ बरस, 10 श्रेष्ठ कविताएं,14 सितंबर 2013, www.bbc.com/ hindi/ india/ depth/bbc_specia.